शांति शिक्षा

संजीव कुमार पाठक*

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी क्रांति ने दुनिया को भौतिकतावाद के अग्र शिखर पर स्थापित कर दिया है, वहीं विज्ञान और तकनीकी की आधारशिला पर स्थापित यह आधुनिक समाज उदात्त मानवीय गुणों और मूल्यों से दूर होता जा रहा है। जिससे कट्टरता, धर्मान्धता, कटुता, असहिष्णुता, आतंकवाद, विवाद, अलगाववाद, संकीर्णता तथा वैमनस्यता बढ़ती जा रही है। प्राथमिक स्तर से ही शांति शिक्षा को व्यावहारिक रूप से विविध विद्यालयी गतिविधियों का स्वाभाविक अंग बनाकर आधुनिक विश्व को इन समस्याओं से मुक्ति दिलाई जा सकती है। प्रस्तुत लेख में शांतिपूर्ण वैश्विक समाज की स्थापना हेतु शांति शिक्षा के महत्व, उद्देश्य, इतिहास, आवश्यकता और सिद्धांत का विवेचन किया गया है। शांति शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों तथा शिक्षक की भूमिका से संबंधित सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास का तात्पर्य व्यक्ति के बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, सांवेगिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक आदि सभी पक्षों से है। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति में पूरी तरह सफ़ल नहीं हो पा रही है। वर्तमान में संपूर्ण विश्व हिंसा और संघर्ष की आग में पल रहा है। हिंसा चाहे वैश्विक स्तर पर हो, चाहे राष्ट्रीय स्तर पर या स्थानीय एवं वैयक्तिक स्तर पर, उसके नित नए स्वरूप, जैसे — असहिष्णुता, कट्टरवाद, वर्ग विवाद, संघर्ष, आतंकवाद आदि के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। 9/11 की अमेरिकी घटना हो या 26/11 का मुंबई हमला या फ़िर भारतीय संसद पर हमला, इन सभी घटनाओं की पृष्ठभूमि में यह तथ्य उभरकर सामने आया

* *शोधार्थी*, आई.ए.एस.ई, डीम्ड विश्वविद्यालय, सरदारशहर चुरु, राजस्थान 331401

है कि इन्हें अंजाम देने वाले तथाकथित पढ़े-लिखे व्यवसायी ही रहे हैं। ये घटनाएँ हमें यह सोचने हेतु बाध्य कर देती हैं कि अखिल विश्व स्तर पर कहीं न कहीं शिक्षा का कोई पक्ष अछूता रहा है, जिससे शिक्षा मानवमात्र का कल्याण करने की बजाय उसे विध्वंसक गतिविधियों में संलग्न कर रही है। रोमां रोलां ने लिखा है, "भयंकर विनाशकारी परिणाम वाले दो विश्व युद्धों ने कम से कम यह सिद्ध कर दिया है कि युद्ध और आक्रमणकारी राष्ट्रीयता के संकीर्ण बंधनों को तोड़ डालना चाहिए तथा प्रेम दया एवं सहानुभूति पर मानव संबंधों का विकास करने के लिए मानव जाति के स्वतंत्र संघ का निर्माण किया जाना चाहिए।" मानव ने सदियों तक युद्धों की विनाशलीला को देखा है तथा उसके विध्वंसक परिणामों को भी भोगा है। मानव स्वभाव की यह अनोखी विडम्बना है कि उसकी तीव्र लालसा, जहाँ उसे हथियार उठाने, युद्ध करने तथा निरंतर संघर्ष करने की उत्तेजना प्रदान करती है, वहीं दूसरी तरफ़ मानव जीवन भर असीम शांति की मृगतृष्णा में भटकता रहता है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जब युद्धों के बाद शांति का मार्ग खोजा गया और लम्बी शांति के बाद युद्ध की ज्वाला भड़क उठी। मानव स्वभाव का दैत्य पक्ष जहाँ उसे युद्ध जैसी गतिविधियों में प्रवृत्त कर देता है, वहीं दैवीय पक्ष उसे शांति के पथ पर अग्रसर करता है।

मानव सभ्यता के वैज्ञानिक, तकनीकी तथा भौतिक विकास के साथ-साथ परमाणु, जैविक व रसायनिक हथियारों के विकास ने मानव जाति को बारूद के ढेर पर बैठा दिया है, जहाँ एक चिंगारी ही सर्वस्व नाश के लिए काफ़ी होगी। ऐसे वातावरण में मानव जाति व सभ्यता की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि विश्व के सभी नागरिकों के बीच मधुर संबंधों और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का विकास हो व विश्व शांति की स्थापना हो।

विश्व शांति की स्थापना के आदर्श लक्ष्य के लिए ही शांति शिक्षा की अवधारणा का जन्म हुआ। इसे शिक्षा के स्वरूप के साथ जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। विगत कुछ दशकों से अस्तित्व में आई शांति शिक्षा वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता के रूप में उभरी है, क्योंकि शांति शिक्षा ही विश्व शांति, स्थिरता, सहिष्णुता, सुदृढ़ और नियोजित भविष्य तथा मानव जाति के निरंतर विकास का एकमात्र साधन है। भारत जैसे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध देश में शांति हेतु प्रयास प्राचीन समय से ही होते रहे हैं। भारतीय धर्मग्रंथों में वर्णित —

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःख भाग भवेत्।।

ऐसे श्लोकों के मूल में शांति की भावना ही निहित है। महाभारत के शांति दूत श्रीकृष्ण के प्रयासों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता —

धृतराष्ट्र के यह पूछने पर कि, "हे दूत कृष्ण! आपका शांति का प्रस्ताव क्या है?" श्रीकृष्ण का उत्तर था — "महाराज! शांति कोई प्रस्ताव नहीं अपितु वर्तमान की आवश्यकता है।"

यही 'वर्तमान की आवश्यकता' हमारी सांस्कृतिक पहचान थी, इसका अभिसिंचन आगे भी होते रहना चाहिए। इस शताब्दी के महान विचारक महात्मा गाँधी ने कहा था, " मैं शांति में विश्वास

रखता हूँ यदि आज शांति नहीं है तो कल कोई जीवन नहीं होगा।"

शांति शिक्षा क्या है?

शांति शिक्षा की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ अग्रलिखित हैं—

यूनीसेफ़ के अनुसार, "शांति शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, मूल्यों और व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक तत्वों को प्रोत्साहित करती है, जिससे बच्चे, किशोर और युवा इस योग्य हो सकें कि वह किसी भी प्रकार के मतभेदों व हिंसा को रोकने तथा ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न करने में, जो शांति स्थापना की ओर ले जा सकें, सक्षम हो सके।"

Lennart Vriens and Robert Aspeslagh के अनुसार, "शांति शिक्षा कौशल, अंतर्दृष्टि तथा ज्ञान के विश्वास को शामिल करती है साथ ही मत निर्माण और दृष्टिकोण, जो कि शांति में जड़ित मानकों और मूल्यों से प्राप्त होते हैं, और दयालु तथा शांतिपूर्ण विश्व की अनुमति की ओर निर्देशित होते हैं, का भी विकास करती है।"

"Peace Education includes development of knowledge, insight and skill as well as the building up of opinions and attitudes, deriving from norm and values embedded in space and directed to the realisation of a humane and peaceful world."

शांति शिक्षा का इतिहास

भारतीय परिप्रेक्ष्य में शांति शिक्षा की संकल्पना काफ़ी प्राचीन है। जिस समय विश्व के अन्य देशों की सभ्यताएँ अंगड़ाई ले रही थीं, भारतीय मेधा अपने शिखर पर थी और भारत को विश्वगुरु का दर्जा हासिल था। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित सर्वे भवन्तु सुखिनः... तथा वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे आदर्श, भारत के शांति पक्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के जीवंत प्रमाण हैं।

वर्तमान समय में शांति शिक्षा को एक लक्ष्य के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार कर लिया गया है। सर्वप्रथम 1945 में यू.एन.ओ. के चार्टर में मानवाधिकारों व मौलिक स्वतंत्रता के उल्लेख को शांति शिक्षा की दिशा में प्रथम कदम माना जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष यह यक्ष प्रश्न था कि ऐसा क्या हो जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के नागरिकों के बीच समझ, सहयोग व समन्वय को स्थापित कर सके। इसके जवाब में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा की बात की गई। ऐसी शिक्षा जो विश्व के सभी देशों द्वारा समान रूप से महत्वपूर्ण मानते हुए अपनाई जाए। इसी अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता ने शांति शिक्षा की अवधारणा को जन्म दिया तथा यह माना जाने लगा कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के संबंध में शांति शिक्षा ही प्रयुक्त की जा सकती है।

शांति शिक्षा के विषय में 1974 में यूनेस्को प्रस्ताव के अंतर्गत कहा गया, 'शिक्षा में आलोचनात्मक विश्लेषण को शामिल किया जाना चाहिए जो विभिन्न देशों में आर्थिक व राजनीतिक वातावरण

के ऐतिहासिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, विवादों और तनावों पर साथ-साथ अध्ययन करते हुए इन विवादों और तनावों पर नियंत्रण स्थापित कर सके। शिक्षा मुख्य रूप से लोगों में प्रतिस्पर्धा रहित रुचि पर ज़ोर देने वाली होनी चाहिए। शांति शिक्षा कुछ इसी प्रकार की होनी चाहिए।'

अब तक विश्व में अनेक तरह के परिवर्तन आ चुके हैं। शांति शिक्षा की यूनेस्को की यह विचारधारा अब विश्व भर में व्यापक अर्थों में अपना ली गई है। विश्व का प्रत्येक देश यह जानने और समझने लगा है कि केवल शांति शिक्षा ही विश्व में व्याप्त तमाम समस्याओं का उन्मूलन कर सकती है।

शांति क्या है?

शांति शिक्षा के अन्य पहलुओं पर विचार करने से पूर्व एक बार यह जानना आवश्यक है कि शांति क्या है? शांति से हमारा अभिप्राय क्या है? यह एक ऐसा आधारभूत प्रश्न है जो हमें सहज ही दार्शनिक चिंतन की ओर ले जाता है। शांति को स्पष्ट करने से पहले कुछ प्रश्न उठ जाते हैं। क्या शांति वैयक्तिक अनुभूति का विषय है? शांति की प्रकृति कैसी होती है? क्या शांति मानसिक अवसादों व तनावों की समाप्ति का प्रतिफ़ल है? शांति मानसिक संतोष की स्थिति है। भारतीय जीवन दर्शन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति बताते हैं। मोक्ष जीवन का वैयक्तिक पक्ष है तथा इसकी प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक साधना का मार्ग बताया गया है। यही आध्यात्मिक साधना शांति का दूसरा पर्याय है।

शांति का दूसरा पक्ष मनोवैज्ञानिक है। इसलिए अर्थ एवं काम को पुरुषार्थ की श्रेणी में रखा गया है। इसके अभाव में किसी भी स्तर पर (वैयक्तिक, पारिवारिक या सामाजिक) शांति असंभव है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ अर्थ, काम, भोजन में इसलिए प्रवृत्त होता है कि जीवन जीने के लिए अनिवार्य व न्यूनतम आवश्यकताएँ वह प्राप्त कर सके। इस न्यूनतम स्तर से नीचे जाते ही जीवन अभावों से ग्रस्त हो जाएगा तथा शांति स्वतः समाप्त हो जाएगी। निर्धनता, रुग्णता, भुखमरी अशांति के कारण हैं। इसी प्रकार जब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कोई व्यक्ति दूसरों की सुविधाओं पर अधिकार जताने की चेष्टा करता है, तो सामाजिक कलह और संघर्ष के कारण शांति समाप्त हो जाती है। जब हम अपनी पृष्ठभूमि की आड़ में दूसरों को छोटा दिखाते हैं, तब भी अशांति पनपती है। अशांति विद्यालयी व्यवस्था में भी है। बच्चों को विषय-वस्तु समझ में न आने पर तनाव बढ़ता है जो अशांति को जन्म देता है। अतः विद्यालयों में शांति का वातावरण स्थापित करना होगा, बच्चों को शांति से संबंधित गतिविधियों से जोड़ना होगा। इसी संदर्भ में गाँधी जी ने कहा था, "यदि हमें विश्व में वास्तविक शांति का पाठ पढ़ाना है तो इसकी शुरुआत बच्चों से करनी होगी।"

शांति के लिए शिक्षा ही क्यों?

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्य बनाने का साधन है, शिक्षा द्वारा शांति के अग्रलिखित बिंदु विचारणीय हैं—

1. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला है शिक्षा ही वह माध्यम है जो समाज के स्वरूप को परिवर्तित करने की क्षमता रखती है। समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करती है। ये बुराइयाँ ही समाज में अशांति की जननी हैं, अतः शिक्षा के द्वारा उन कारणों का निराकरण किया जा सकता है।
2. शिक्षा के द्वारा विभिन्न संस्कृतियों, समाजों और राष्ट्रों के बीच संवाद उत्पन्न एवं विकसित किया जा सकता है, जो एक-दूसरे की संस्कृतियों को समझने तथा उनके बीच आदान-प्रदान करने का आधार प्रस्तुत करती है।
3. समाज में व्याप्त विविधताओं का सम्मान करते हुए उनके बीच सामंजस्य स्थापित करने में शिक्षा की भूमिका सदा से रही है। रंगभेद, साम्प्रदायिकता, नस्लवाद, जातिवाद, कट्टरवाद, तथा आतंकवाद जैसी समस्याओं का समाधान करने में शिक्षा ही व्यक्ति को सक्षम बनाती है।
4. शिक्षा के द्वारा हम वैयक्तिक स्तर पर उस सामंजस्य की भावना को जाग्रत कर सकते हैं, जिसे कभी ऋग्वेद की ऋषिप्रज्ञा ने इस प्रकार साक्षात् कृत किया था—

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मानसि ज्ञानतम,
देवभाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।
समानो मत्र समितः समानी मनः सह चिनतेयेषाम,
मंत्रमात्रि मन्त्रये व् सयानेन वे हविषा जूहोयि।
सयानी व् आकृतिः समानाः हन्नयानि वः,
सयानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

अर्थात् हम परस्पर एक होकर रहें, परस्पर मिलकर वार्तालाप करें। समान मन से ज्ञान प्राप्त करें जिस प्रकार श्रेष्ठ जन एक होकर उपासना करते हैं, उसी प्रकार से हम भी अपना विरोध त्यागकर अपना काम करें। हम सबकी प्रार्थना समान हो, भेदभाव से रहित होकर परस्पर मिलकर रहें, मन, चित, विचार समान हों, हमारे हृदय समान हों, जिससे हमारा कार्य परस्पर पूर्ण रूप से संगठित हो। इस तरह शिक्षा के द्वारा शांति की स्थापना करना असंभव नहीं है।

शांति शिक्षा के सिद्धांत

अक्तूबर 1983 में पेरेगुआ में शांति शिक्षा के सिद्धांतों को अपनाया गया। शांति शिक्षा पर विश्व राष्ट्र संघीय अध्यापक संघ के एक कर्मचारी समूह द्वारा इन सिद्धांतों की व्याख्या की गई। शांति शिक्षा के सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

1. शांति शिक्षा द्विपक्षीय समझौता है। एक पक्ष है शांति की आवश्यकता व संभावनाएँ तथा दूसरा है शांति हेतु पहल, तुरंत आवश्यक कार्यवाही।
2. शांति शिक्षा का एक सिद्धांत यह भी है कि वह समस्याओं की अंतःनिर्भरता के प्रति जागरूकता पैदा करे। आर्थिक-सामाजिक जटिलताएँ, अशिक्षा, बेरोज़गारी, धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक अपरिपक्वता को दूर करने के लिए प्रयास करे व 'शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व' की आवश्यकता पर बल दे।
3. बालकों, युवाओं और वयस्कों में अतीत व भविष्य के विवादों के वास्तविक कारणों और उत्तरदायित्वों के प्रति समझ का विकास करना।

इस प्रकार की राजनीतिक व आर्थिक प्रक्रिया को नेतृत्व प्रदान करना जो युद्ध की संभावनाओं पर विजय प्राप्त कर सके।

4. शांति शिक्षा वह है जो किसी भी प्रकार के युद्धों के विरुद्ध मानव जाति के प्रभावशाली कदम हेतु कार्य करे व नि:शस्त्रीकरण का समर्थन करे। युद्ध जो कि मानव स्वभाव का एक भाग है, उसे नियंत्रित कर उसके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित कर सके।
5. शांति शिक्षा नागरिकों को व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से युद्ध के बचाव के लिए उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना सिखाए। शांति शिक्षा का दायित्व है कि वह विश्व के समस्त नागरिकों में परमाणु, रासायनिक व जैविक हथियारों के बारे में, उनके विनाशकारी परिणामों व उनसे होने वाली हानियों के बारे में समझ उत्पन्न करे।

शांति शिक्षा के उद्देश्य

शांति शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1. विश्व के नागरिकों को एकसमान समझने की भावना का विकास करना।
2. विश्व को एक परिवार समझने की भावना जाग्रत करना।
3. मानव की पारस्परिक अंत:निर्भरता को समझाने का प्रयास करना।
4. विश्व शांति के लिए प्रयासरत संगठनों व व्यक्तियों से बच्चों को परिचित करवाना।
5. विश्व अहिंसा दिवस, संयुक्त राष्ट्र दिवस, मानवाधिकार दिवस जैसे आयोजनों को वैश्विक रूप प्रदान करना।
6. प्रतिवर्ष नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों का जीवन परिचय तथा कार्य प्रणाली व उनके कार्यों की महानता से छात्रों को परिचित कराना।
7. युद्ध तथा भयंकर विनाशक हथियारों के विनाश की क्षमता से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
8. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना का विकास करना।
9. ‘जियो और जीने दो’ के दर्शन का विकास करना।
10. मानवता के वैश्विक मूल्यों का विद्यार्थियों में विकास करना।

शांति शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान विश्व बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है। विश्व का हर कोना हिंसा, अलगाववाद, आतंकवाद और संघर्ष में संलग्न है। लोगों के बीच सहनशीलता घटती जा रही है। आपसी विश्वास खत्म होता जा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के बाद सबका ध्यान इस ओर गया, परंतु वे प्रयास सफ़ल नहीं रहे। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व में शांति बनाए रखने के उद्देश्य से गठित संयुक्त राष्ट्र संघ अपने उद्देश्यों में पूर्णरूपेण सफ़ल नहीं हो सका। इसी कार्य के निमित्त संयुक्त राष्ट्र की एक आनुषांगिक इकाई के रूप में यूनेस्को का गठन किया गया। यूनेस्को की भूमिका में कहा गया है, ‘चूँकि युद्ध मनुष्यों के मस्तिष्क से आरंभ होते हैं, इसलिए शांति की रक्षा के साधन भी मनुष्य के मस्तिष्क से ही निर्मित किए

जाने चाहिए। न्याय तथा शांति बनाए रखने के लिए मानवता की रक्षा तथा संस्कृति का व्यापक प्रसार मानव की महत्ता के लिए आवश्यक है। यह एक ऐसा पवित्र कर्तव्य है जो प्रत्येक देश को आपसी सहयोग की भावना के आधार पर पूरा करना चाहिए। केवल सरकारों के राजनीतिक और आर्थिक समझौतों तथा बंधनों द्वारा स्थापित की हुई शांति को संसार के सभी लोग एकमत होकर स्वीकार कर लें, इसमें संदेह है। इस दृष्टि से यदि शांति को कभी असफ़ल नहीं होना है तो उसे मानव जाति की बौद्धिक तथा नैतिक अखंडता पर आधारित होना चाहिए।'

शांति शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है —

1. विश्व के सभी नागरिकों के बीच सौहार्द्र तथा विश्वास का वातावरण उत्पन्न करने के लिए।
2. विभिन्न धर्मों, समुदायों, जातियों, तथा संस्कृतियों की जीवन शैलियों की विभिन्नता में एकता की संभावना तलाश कर उसका महत्व स्थापित करने के लिए।
3. विश्व के सभी लोगों के लिए रोटी, कपड़ा, मकान जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए।
4. विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान तथा सद्भाव का विकास करने के लिए।
5. लोगों में सहिष्णुता, क्षमा, दया, सहयोग, त्याग तथा परोपकार की भावना का विकास करने के लिए।
6. लोगों में पारस्परिक समझदारी का विकास करने के लिए।
7. व्यक्तियों में विचार-विनिमय तथा संचार हेतु बंधन मुक्त, खुला और स्वतंत्र वातावरण का निर्माण करने के लिए।
8. आत्मवत सर्वभूतेषु की भावना का विकास करने के लिए।
9. 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'परहित सरिस धरम नहीं भाई' के आदर्शों को पुनः स्थापित करने के लिए।
10. वैचारिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक मतभेदों को समाप्त करने के लिए।

इसी संदर्भ में सी. एफ़. स्ट्रांग ने लिखा है, "उनका देश विश्व के प्रति भौतिक समृद्धि, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक प्रगति के लिए कितना अग्रणी है। विभिन्न देशों ने ज्ञान, विचार, वैज्ञानिक उन्नति के भंडार में तथा साहित्य एवं कला के सामान्य विकास में किस सीमा तक योगदान दिया है। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं विश्व शांति की आवश्यकता पर बल देना कितना आवश्यक है, यह बात उन्हें समझनी चाहिए।"

शांति शिक्षा का चतुष्फ़लकीय वर्गीकरण

ओकेमोतो ने शांति शिक्षा का चतुष्फ़लकीय वर्गीकरण प्रस्तुत किया था, जो निम्नवत है —

1. **युद्ध की आलोचना के रूप में शांति शिक्षा** — इसमें समय-समय पर होने वाले शांति आन्दोलन तथा शिक्षण संस्थाओं के कार्यक्रमों के साथ-साथ निश्चय ही युद्ध विरोधी प्रयासों को संदर्भित किया जाता है।
2. **उदारता, स्वतंत्रता के रूप में शांति शिक्षा** — इसका समन्वय मानवाधिकार के विकास के

साथ निरक्षरता, कुपोषण आदि पर आधारित शोषण और विभेदीकरण से है।

3. **अधिगम प्रक्रिया के रूप में शांति शिक्षा** — यह शांति शिक्षा किसी विषय के रूप में नहीं पढ़ाता बल्कि शांति ही पढ़ाता है। यह अधिकारवादी शिक्षण के विरुद्ध विद्रोह करता है तथा सहिष्णुता, लोचनीयता एवं समालोचना के गुणों का विकास करता है।
4. **जीवन पद्धति (शैली) की गतिविधि (आन्दोलन) के रूप में शांति शिक्षा** — विकासशील विश्व की पृष्ठभूमि पर विकसित देशों में अत्यधिक उत्पादन और अत्यधिक उपयोग के दुष्परिणामों के प्रति यह जागरूकता का सृजन करता है और वैयक्तिक विकास, पारिस्थितिकीय जागरूकता, आत्मशांति व साधारण जीवन के मूल्यों का विकास करता है। ये सभी संदर्भ बड़ी तकनीकी और विशेष गुण से परमाणु शक्ति तकनीकी के खतरों की कीमत से संबंधित है।

शांति शिक्षा और पाठ्यक्रम

शांति शिक्षा हमारे नियमित विद्यालयों के निर्धारित विषयों की तरह एक विषय नहीं है जिसके लिए एक पुस्तक और एक कालांश निर्धारित करके उसे पाठ्यक्रम का अंग बना दिया जाए। निश्चय ही हिंदी, गणित, विज्ञान, अंग्रेज़ी, सामाजिक विज्ञान आदि विषयों की भाँति शिक्षक एक पुस्तक लेकर यह नहीं कह सकता कि आज हम शांति शिक्षा का फ़लां अध्याय पढ़ेंगे। शांति शिक्षा को विद्यालयी गतिविधियों में इस प्रकार शामिल किया जाना चाहिए जिससे किसी को यह न लगे कि हम किसी विशेष विषय या प्रत्यय का अध्ययन करने जा रहे हैं। जिस प्रकार दाल और सब्ज़ी में नमक का होना केवल स्वाद ही नहीं बढ़ाता, अपितु आयोडीन, सोडियम, क्लोरीन जैसे तत्वों की पूर्ति भी करता है, उसी प्रकार शांति शिक्षा का पाठ्यक्रम भी होना चाहिए, जो बच्चों के लिए आनंदवर्धक हो तथा शांति बढ़ाने का लक्ष्य भी पूरित हो जाए। एक अन्य उदहारण से समझा जा सकता है कि ऐसी गतिविधियाँ जो प्रार्थना सभा का अंग हैं, वो सब बच्चों को अनायास ही याद हो जाती हैं। अर्थात् प्रार्थना सभा में होने वाला नियमित राष्ट्रगान चार-पाँच साल के छोटे-छोटे बच्चों को भी याद हो जाता है और वो घर पर आकर सही-गलत उच्चारण करते हुए माता-पिता व परिजनों को सुनाते हैं। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि शाब्दिक, व्याकरणिक त्रुटियाँ, ये बच्चे बड़े होकर ठीक कर लेते हैं। वहीं राष्ट्रगान की धुन, स्वरों का उतार-चढ़ाव तो वे बचपन से ही सीख लेते हैं। निश्चय ही विद्यालयी व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग हो जाने के कारण राष्ट्रगान को कक्षा में पढ़ाना, सीखना नहीं पड़ता है।

शांति शिक्षा के संदर्भ में भी ऐसा ही होना चाहिए। वास्तव में, शांति शिक्षा एक ऐसा संप्रत्यय है जो अनेक छोटे-छोटे प्रत्ययों से मिलकर बना है। पाठ्यक्रम में इन प्रत्ययों को पहचानकर स्थान दिया जा सकता है। ये प्रत्यय मिलकर ही शांति और सौहार्द की भावना जाग्रत करेंगे तथा शांति शिक्षा के उद्देश्य पूरित हो सकेंगे। शांति शिक्षा के प्रत्यय हैं — दया, क्षमा, सहयोग, भाईचारा, करुणा, देशभक्ति, प्रेम, सम्मान, स्वाभिमान, श्रद्धा, मानवता, राष्ट्रहित,

ईमानदारी आदि। इसके लिए साहित्य, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन आदि विषयों में इन गुणों को जाग्रत और उद्दीप्त करने वाले अध्यायों को शामिल किया जाना चाहिए। कुछ पाठों के विषय में सुझाव निम्नवत हैं —

1. इतिहास के किसी भी अध्याय में शिवाजी व मुगलों का ज़िक्र आने पर 'शिवाजी और गौहर बानो' का प्रकरण 'यह भी जाने' ऐसे शीर्षक के अंतर्गत दिया जा सकता है। प्रकरण कुछ इस प्रकार है— शिवाजी के सेनापति द्वारा मुगल सेनापति की पत्नी गौहर बानो को तोहफ़े के रूप में शिवाजी के समक्ष पेश किया गया तो शिवाजी ने उन्हें देखकर कहा कि, "मेरी माँ भी आपकी तरह सुंदर होती तो मैं भी सुंदर होता" यह कहकर उन्होंने अपने सेनापति को बुरी तरह फ़टकारा और गौहर बानो को ससम्मान मुगल डेरे में वापस भिजवाया। शिवाजी के आदर्श चरित्र का बच्चों पर सुंदर प्रभाव पड़ेगा और नारी के प्रति सम्मान कि भावना का उदय होगा। शिवाजी के महान आचरण से विद्यार्थियों को भी आचरण की श्रेष्ठता की सीख मिलेगी, ऐसे प्रकरण निःसंदेह शांति की आधारशिला बन सकेंगे।
2. आजकल पाठ्यपुस्तकों की विषय-वस्तु के निर्धारण में भी राजनीति होती है। सत्तारूढ़ दल के विचारधारा वाले नए लेखकों, कवियों की रचनाओं को शामिल किया जाता है, जबकि प्रेमचंद, पंत, प्रसाद, निराला जैसे साहित्यकारों की अमर कृतियों को गौण कर दिया जाता है। ऐसा कौन-सा विद्यार्थी होगा जो मुंशी प्रेमचंद की अमर कहानी 'ईदगाह' को पढ़ने के बाद द्रवित न हो उठेगा। करुणा, दया, प्रेम, त्याग की अनेक भावनाएँ एक साथ उसके मन में हिलोरें न लेने लगेंगी। हामिद के चिमटे व अपने बालमन के खयालों में वो क्या-क्या तलाश नहीं कर लेगा। उसे हामिद के रूप में अपना ही अक्स नज़र आएगा। अमीर परिवारों के बच्चे भी अपनी कीमती चीज़ों के प्रति अपना नज़रिया बदल देंगे। कक्षा के गरीब परिवार के बच्चों को कहीं-न-कहीं अमीना के अक्स में अपना ही कोई परिवारजन नज़र आएगा। निःसंदेह ऐसे पाठों की पृष्ठभूमि में जाग्रत भाव शांति शिक्षा के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक सिद्ध हो सकेंगे।
3. इसी प्रकार, एक अन्य कहानी जिसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, वह है 'हार की जीत'। बाबा भारती का अपने अतिप्रिय घोड़े से अत्यंत लगाव का प्रारंभिक वर्णन, फिर डाकू सुल्तान द्वारा घोड़ा मांगना, बाबा भारती का इनकार, फिर एक दिन अपाहिज के वेश में डाकू सुल्तान द्वारा बाबा भारती से छल करके घोड़ा हासिल कर लेना। घोड़ा लेकर भागते डाकू सुल्तान को बाबा भारती का यह निवेदन कि, "इस घटना का जिक्र किसी से न करना वर्ना लोगों का बीमारों, गरीबों और अपाहिजों से विश्वास उठ जाएगा।" बाबा के ये शब्द सुल्तान को अत्यधिक परेशान कर देते हैं तथा वह घोड़ा वापस कर देता है।

वर्तमान समय में हम यह देख रहे हैं कि लोगों का आपसी विश्वास खत्म होता जा रहा है। गरीबों,

दीन-दुखियों के प्रति भावनाएँ बदलती जा रही हैं। ऐसे में उच्च प्राथमिक स्तर के साहित्य के पाठ में उक्त कहानी को शामिल कर एक आशा की किरण जाग्रत की जा सकती है।

4. भाषा व सामाजिक अध्ययन के विषय में इस प्रकार के अध्यायों या उनके अंश को शामिल किए जाने की संभावना अधिक है। परंतु ऐसा नहीं है कि विज्ञान, गणित आदि के साथ ऐसा नहीं हो सकता। विज्ञान में न्यूटन से संबंधित पाठ में उनके जीवन की एक घटना का ज़िक्र किया जा सकता है। इसमें उनके प्रिय कुत्ते डायमंड द्वारा उनके प्रयोग कक्ष में उछल-कूद करने से आग लग जाती है तथा उनके बीस वर्षों के शोध पत्र जलकर राख हो जाते हैं। परंतु वह महान वैज्ञानिक इतना ही कहता है, "डायमंड! तुम नहीं जानते तुमने ये क्या कर दिया है" विज्ञान के विद्यार्थियों में धैर्य और सहिष्णुता के गुणों को उद्दीप्त करने में यह उदाहरण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

   इसी प्रकार, भारत के मिसाइलमैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से संबंधित अनेक प्रसंग हैं, जिन्हें भारतीय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आदि के पाठों में अंशतः शामिल किया जा सकता है, जैसे— एक उपग्रह के प्रक्षेपण में असफ़ल होने पर होने वाली बैठक में डॉ. कलाम ने उस प्रोजेक्ट का मुखिया होने के नाते सारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। इस प्रसंग द्वारा बच्चों में महान नेतृत्व व उत्तरदायित्व की भावना का प्रस्फ़ुटन किया जा सकता है।

5. साहित्य की पुस्तकों में इसी प्रकार कुछ चर्चित कविताओं को स्थान दिया जाना चाहिए, जैसे— गौतम बुद्ध और देवव्रत के हंस संबंधी विवाद की घटना पर आधारित प्रसिद्ध कविता 'माँ कह एक कहानी, राजा था या रानी' इसकी अंतिम पंक्ति में यशोधरा राहुल से कहती है, 'राहुल तू निर्णय कर इसका न्याय पक्ष लेता है किसका' इस कविता की भावपूर्ण प्रस्तुति कर शिक्षक स्वयं को यशोधरा के स्थान पर रखकर तथा बच्चों को राहुल के स्थान पर रखकर 'न्याय पक्ष लेता है किसका' की बात पूछ सकता है। इस कहानी में भी दया, करुणा, सेवाभाव, उदारता व न्याय के अनेक गुण समाहित हैं। इसी प्रकार कुछ वीर-रस की कविताओं से देश प्रेम की भावना जागृत की जा सकती है, जैसे— श्याम नारायण पाण्डेय की कविता 'हल्दीघाटी', सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी', जयशंकर प्रसाद जी की कविता 'स्वतंत्रता पुकारती' आदि।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम की क्रियाओं में शांति शिक्षा के विविध प्रत्ययों को शामिल करके शांति शिक्षा के मुख्य लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

अस्तु पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु में ऐसी क्रियाओं को प्रमुखता से स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।

शांति शिक्षा और शिक्षण विधि

जिस प्रकार शांति शिक्षा का पाठ्यक्रम अन्य विद्यालयी विषयों की भाँति सुनिश्चित नहीं किया

जा सकता; उसी प्रकार उसकी कोई विशेष शिक्षण विधि भी निर्धारित नहीं की गई है। यह प्रत्येक विषय के शिक्षण में शामिल की जा सकती है। प्रत्येक शिक्षक को अपना स्वयं का सकारात्मक दृष्टिकोण तथा अपने वैयक्तिक और मानवीय गुणों को विकसित करना होगा। यदि शिक्षक स्वयं ही अहिंसा, सहिष्णुता, दया, क्षमा, उत्साह, स्नेह, विनम्रता आदि गुणों से युक्त नहीं है तो उसका शिक्षण कभी शांति शिक्षा को प्रभावी नहीं बना सकता।

शांति शिक्षा में अध्ययन-अध्यापन हेतु प्रत्यक्ष विधियों की बजाय अप्रत्यक्ष विधियाँ अधिक उपयोगी हैं। इस हेतु संपूर्ण विद्यालयी परिवेश में शांति संस्कृति को अपनाना एवं विद्यालयी परिवेश में परिलक्षित करना अत्यावश्यक है। शांति अध्ययन-अध्यापन हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं —

1. विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक विभिन्नताओं में समन्वय प्रदर्शित करने वाले धार्मिक उत्सवों से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
2. ऐसी फ़िल्मों का चयन किया जाए, जो शांति, न्याय, एकता को बढ़ावा देती हों तथा उन्हें समय-समय पर दिखाया जाए। इनके प्रदर्शन के उपरांत इनके विषय आदि पर छात्रों से सामूहिक चर्चा की जाए।
3. विद्यालयों में छात्रों से सामूहिक रूप से कार्य कराया जाए तथा सामुदायिक कार्यों में विद्यालयों और विद्यार्थियों की भूमिका सुनिश्चित की जाए।
4. ऐसे क्रियाकलापों में सार्वजनिक स्थलों की साफ़-सफ़ाई, विद्यालय परिसर की साफ़-सफ़ाई, ज़िम्मेदारी के साथ समूह में पौधे लगाना और उनकी देखभाल करना; ऐसे ही अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए जिसमें बच्चे मिल-जुलकर परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करते हों। हाल ही में देश के प्रधानमंत्री द्वारा प्रारंभ किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' से जन सामान्य में साफ़-सफ़ाई के प्रति जागरूकता बढ़ी है।
5. किसी भी क्षेत्र में वर्तमान समय में मीडिया की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। अस्तु शांति शिक्षा के प्रयास में मीडिया को सहयोगी बनाया जाए। समय-समय पर विद्यालय में शांति से संबंधित विषयों पर विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किए जाएँ, साथ ही युद्ध की विभीषिका और हिंसा के परिणामों पर आधारित चलचित्र और वृतचित्रों आदि का प्रदर्शन किया जाए।
6. शांति से संबंधित विषयों पर विद्यालयों में बच्चों के बीच भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए व ऐसी व्यवस्था की जाए कि बच्चों के विचारों को माह में एक बार समाचार-पत्रों में प्रकाशित किया जाए।
7. विद्यालयों में शिक्षकों व अभिभावकों की संगोष्ठी का आयोजन कर अभिभावकों को शांति से संबंधित व्यवहारों की जानकारी दी जाए।

8. शांति से संबंधित विषयों पर विद्यालयों में समय-समय पर सेमिनार, समूह चर्चा का आयोजन किया जाए।
9. शांति से संबंधित व्यवहारों का ज्ञान देने के लिए शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
10. शांति के व्यवहार को बच्चों में प्रोत्साहित करने के लिए कुछ बच्चों को अच्छा व्यवहार करने पर पुरस्कृत करने की व्यवस्था की जाए।

शांति शिक्षा और शिक्षक की भूमिका

किसी देश के विकास में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान होता है। जैसी देश की शिक्षा व्यवस्था होती है, वैसा ही देश का विकास होता है। शिक्षा व्यवस्था की सफ़लता उसके प्रभावशाली क्रियान्वयन पर निर्भर करती है और यह क्रियान्वयन देश की सरकार, शिक्षा नीति, प्रशासन, शैक्षिक संस्थाओं और शिक्षकों पर निर्भर करता है।

निश्चय ही अच्छे शिक्षक से अच्छी शिक्षा, अच्छी शिक्षा से अच्छे नागरिक तथा अच्छे नागरिकों से ही कोई देश महान बनता है। इस शृंखला की पहली कड़ी शिक्षक ही है। कहा भी गया है कि, "कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से अधिक उन्नति नहीं कर सकता।"

विद्यार्थियों के सतत संपर्क में रहने के कारण शिक्षक; शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग हो जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों में संस्कार, मूल्य, अभिवृत्ति आदि

शांति शिक्षा की जानकारी के लिए गतिविधियाँ

उम्र 7+ भावनाएँ बाँटना —

बच्चों को एक गोल घेरे में बैठाएँ और पूछें उनके जीवन का सबसे खुशी का दिन कौन-सा था? क्यों वह दिन बहुत खुशी का था? प्रत्येक बच्चे को प्रश्नों का उत्तर देने दें। कुछ बच्चों को एक या ज़्यादा अनुभवों की भूमिका निर्वाह करने दें। जैसे ही बच्चे भावनाओं की बात करने से परिचित हो जाएँ, उनसे अधिक कठिन प्रश्न पूछें, जैसे — सच में आपको किस चीज़ से डर लगता है? आप ऐसा क्यों महसूस करते हैं? जब आप किसी को लड़ते हुए देखते हैं तो आपको कैसा लगता है? आपको ऐसा क्यों लगता है? आपको सबसे ज़्यादा दुख किस चीज़ से पहुँचता है? क्यों?

उम्र 10+ अन्याय को न्याय से दूर करें —

समझाएँ कि विश्व में अन्याय के बहुत सारे कारण हैं। यह भी बताएँ कि न्याय ही विश्व में शांति स्थापित करने का मूल माध्यम है। अन्याय के दो या तीन उदाहरण दें। बच्चों को अधिक उदाहरण देने के लिए कहें। उसके बाद पूछें अन्याय का क्या कारण था? आप इसी तरह की परिस्थितियों में कैसा महसूस करेंगे? कुछ बच्चों को उनके उत्तर पूरी कक्षा में बताने दें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005, पृष्ठ 69, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

का संचार करने वाला होता है। शिक्षक ही विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी होता है।

इस प्रकार, शांति शिक्षा के संदर्भ में भी यही कहा जा सकता है कि जब तक शिक्षक शांति शिक्षा हेतु प्रयास नहीं करेंगे, शांति शिक्षा के प्रसार और विकास हेतु स्वयं पहल नहीं करेंगे, तब तक शांति शिक्षा अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगी। शांति शिक्षा के प्रसार में सफ़ल योगदान के लिए शिक्षकों को कुछ दायित्व निभाने होंगे; जो निम्नवत हैं —

1. विश्व के समस्त देशों के शिक्षकों को शांति शिक्षा हेतु स्वयं जागरूक व सहिष्णु दृष्टिकोण अपनाना होगा।
2. शांति शिक्षा के प्रसार हेतु शिक्षकों के अध्ययन दल व प्रतिनिधित्व दल बड़ी संख्या में एक-दूसरे के देशों में भेजे जाने चाहिए।
3. शिक्षकों द्वारा शांति शिक्षा हेतु नवीन क्षेत्रों में अनुसंधान, अनुसंधान पद्धतियों, नवीन गतिविधियों व प्रयासों को क्रियान्वित करना चाहिए। अनुसंधान के परिणामों को विश्व समुदाय के सामने लाया जाना चाहिए।
4. शिक्षको द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देशों की संस्कृति, धर्म, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्थाओं से संबंधित ज्ञान का आदान-प्रदान बड़े पैमाने पर किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न देशों के नागरिकों के बीच सहिष्णुता, प्रेम, सौहार्द को बढ़ाया जा सके। इस हेतु अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों और सम्मेलनों का बड़ी संख्या में आयोजन किया जाना चाहिए।
5. शांति शिक्षा के प्रसार हेतु शिक्षकों को चाहिए कि अपने विद्यार्थियों में पड़ोसी राष्ट्रों व विश्व के अन्य राष्ट्रों से विवादस्पद मुद्दों पर सरल, सकारात्मक व सहिष्णु दृष्टिकोण का विकास करें। उग्रता के स्थान पर सहिष्णुता, विवाद के स्थान पर समझौता, शांतिपूर्ण हल व शांतिपूर्ण संबंधों हेतु मानस बनाए जाने के प्रयास किए जाने चाहिए।
6. शांति शिक्षा हेतु शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण पद्धतियों में अंतःअनुशासनात्मक शिक्षण पद्धतियों को अपनाया जाना चाहिए, जिससे विभिन्न संकायों, विषयों व पाठ्य विषय-वस्तुओं के साथ शांति शिक्षा को संबंधित कर पढ़ाया जा सके।
7. शांति शिक्षा हेतु संदर्भ पुस्तकों, पाठ्यपुस्तकों व अनुसंधान प्रतिवेदनों का अधिक-से-अधिक संख्या में प्रकाशन कराया जाना चाहिए। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्थाओं व केंद्रों की विभिन्न गतिविधियों, यूनेस्को के आदर्शों, निःशस्त्रीकरण के प्रयासों आदि विषयों के बारे में पाठ्य सामग्री को बहुतायत में प्रकाशित किया जाना चाहिए ताकि विश्वभर में जनमानस को शांति हेतु प्रेरित किया जा सके।
8. शिक्षकों द्वारा शांति और नि:शस्त्रीकरण के लिए सभी अवसरों पर पहल की जानी चाहिए तथा शांति व नि:शस्त्रीकरण के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में सक्रिय भागीदारी निभाई जानी चाहिए।

संदर्भ

अरोड़ा, रीता. 2005. *शिक्षा में नव चिंतन*. शिक्षा प्रकाशन, जयपुर. पृ. 2–3.

एसपेसलाफ़, रोबोर्ट. 1986.'पीस एजुकेशन'. संपादन में लास्ज़लो, ई और यू. जे. वाई. (संपादक). *वर्ल्ड इंसाइक्लोपीडिया ऑफ़ पीस*. पेरगॉमन प्रेस, ऑक्सफ़ोर्ड. वॉल्यूम I और II, पृ. 182.

ओकामोटो, मितसू. 1984. 'पीस रिसर्च एंड पीस एजुकेशन'. *स्पेशल इशू ऑन पीस एजुकेशन*. संपादन में दिवाकर आर. आर. (संपादक). गाँधी पीस फ़ाउंडेशन, नयी दिल्ली. वॉल्यूम VI, अंक 4 और 5, पृ. 217–23.

गार्डिया, आलोक और पुष्पेश पाठक. 2010. 'शांति शिक्षा एवं विद्यालयों में शांति संस्कृति की अवधारणा.' *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. पृ. 48.

____. 2010. 'शांति शिक्षा एवं विद्यालयों में शांति संस्कृति की अवधारणा.' *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. पृ. 46.

जून 1999. *यूनिसेफ़ में शांति शिक्षा*. सूसन फ़ाउंटेन, वर्किंग पेपर, एजुकेशन सेक्शन, प्रोग्राम डिवीज़न, न्यूयॉर्क.

भान, सुशीला. 2004. शांति शिक्षा. *भारतीय शिक्षा का विश्वज्ञानकोश*. पृ. 48.

मालवीय, राजीव. 2013. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद. द्वितीय संस्करण, पृ. 378.

____. 2013. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद. द्वितीय संस्करण, पृ. 382.

सिंह, गजेन्द्र राजपूत, सतीश मंगल और यजुवेन्द्र बंसल. 2011. *विश्व शांति एवं भावी शिक्षा*. शोध लेख. विश्व शांति एवं भावी शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, भागलपुर. पृ. 65.

____. 2011. विश्व शांति एवं भावी शिक्षा. शोध लेख. विश्व शांति एवं भावी शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, भागलपुर. पृ. 67.